डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B. A. Part - I
General & Subsidiary
B. A. Part-1 General & Subsidiary HINDI

Date - 28.01.2022.

Ajanta
Page No.
Date

मैं नीर भरी दुःख की बदली

मैं नीर भरी दुःख की बदली,
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झनी मचली,
मैं नीर भरी दुःख की बदली!

मेरा पग पग संगीत भरा,
श्वासों में स्वप्न पराग झरा,
नभ के नव रंग बुनते दुकूल,
छाया में मलय बयार पली,
मैं नीर भरी दुःख की बदली!

मैं क्षितिज भृकुटी पर घिर धूमिल,
चिंता का भर बनी अविरल,
रज कण पर जल कण हो बरसी,
नव जीवन अंकुर बन निकली,
मैं नीर भरी दुःख की बदली!

पथ न मलिन करते आना,
पद चिह्न न दे जाते आना,
सुधि मेरे आगम की जग में,
सुख की सिहरन हो अंत खिली,
मैं नीर भरी दुःख की बदली!

Scanned by CamScanner

विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली,
मैं नीर भरी दुःख की बदली!

शब्दार्थ :—
स्पंदन = गति
चिर निस्पंद = चिरस्थायी, हमेशा स्थिर रहनेवाला
क्रंदन = रोना, विलाप
आहत = घायल, जख्मी
निर्झरणी = झरना, नदी
पराग = पराग-कण, सुगंध
दुकूल = वस्त्र, कपड़ा
भृकुटि = भौंहे
मलय-बयार = दक्षिण-स्थित चंदन वनों से युक्त मलय पर्वत से बहने वाली हवा, जो सुगंध और शीतलता देती है।
धूमिल = धुंधला, धुएँ के रंग का
सुधि = स्मृति, याद, खबर
आगम = आगमन, आना
सिहरन = शीत या भय से काँपना, सुख-दुःख से रोमांचित होना
उमड़ना = द्रव पदार्थ का बहुतायत होने के कारण ऊपर उठना, उठकर फैलना या छाना, उमंग या आवेश में आना / निर्माण होना।

Scanned by CamScanner

Ajanta PRODUCTS
Page No.
Date

संदर्भ - प्रसंग :—
आधुनिक हिन्दी कविता की मूर्धन्य कवयित्री के काव्य में एक मार्मिक संवेदना है। 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' महादेवी जी के जीवन विषयक दृष्टिकोण को स्पष्ट करने वाली अत्यंत लोकप्रिय कविता है। इस कविता में बादल का मानवीकरण किया गया है। बादलों का जीवन अल्पकालीन होता है, लेकिन वे अपने सीमित आयु में सृष्टि को हरा-भरा कर देते हैं। वैसे ही हमारा जीवन भी जनकल्याण के लिए समर्पित होना चाहिए।

व्याख्या :—
महादेवी जी कहती है कि मैं तो दुःख रूपी जल से भरी हुई बदली हूँ। मेरे स्पंदन अर्थात गति में हमेशा स्थिर रहने वाला परिवर्तन बसा है। अर्थात बादल हवा के साथ सभी जगह पहुँचते हैं और चिरस्थायी विकास करते हैं। स्पंदनयुक्त बादल आपस में टकराते हैं और गड़गड़ाहट की ध्वनि का निर्माण होता है। कवयित्री ने इसे उनका क्रंदन कहा है। लेकिन बादलों के इसी क्रंदन के कारण जोरों की बारीश होती है और प्यासा विश्व हर्षविभोर होकर हँसने लगता है। बादलों की गड़गड़ाहट से चमकने वाली बिजली, मानो मेरे नयनों में जलते हुए दीपक ही है। जैसे ही बिजली चमकती है बादलों से जलधाराएं प्रवाहित होने के लिए मचलती है।

Scanned by CamScanner

बादलों का आगमन खुशनुमा और संगीतभरा होता है। बादलों को साथ लेकर बहने वाली हवा में स्वप्नवत सुगंध होती है। मिट्टी की भिनी-भिनी खुशबू सबको आकर्षित करती है। बादलों में सूरज की किरणें फैल जाती हैं तो मानो ऐसा लगता है कि आकाश में किसी ने अनेक रंगों का वस्त्र फैला दिया है। ग्रीष्म में असहय उष्मा को झेलता हुआ व्यक्ति अचानक बादल की छाया पा लेता है तो मानो उसे लगता है कि मलय पर्वत से आने वाली चंदन से सुगंधित मंद हवा का ठंडक भरा सुख पा लिया हो।

कवयित्री ने धरती पर फैले क्षितिज को धरती की भृकुटि कहा है और उस भृकुटि पर धुएँ के रंग में फैले बादलों को देखकर वह कहती है कि मानो वे घनी चिन्ता का भाव बन बैठे हैं।

धरती पर फैली मिट्टी पर बदली जब जलकण बनकर बरसती है तो मिट्टी से तृणों तथा पेड़ों के बीजों से नवांकुर फूट निकलते हैं। नवजीवन का निर्माण हो जाता है। बदली कहती है कि मेरे आगमन से पथ में कोई गंदगी नहीं फैलती और न जाते वक्त अपने पदचिह्न छोड़ जाती हूँ। अर्थात जिस प्रकार बादल हवा के साथ उड़ आते हैं, रास्ते में कूड़ा-कचरा नहीं फैलाते और बरस-बरसकर पूर्णतः मिट जाते हैं, कोई अस्तित्व नहीं छोड़ते। उसी प्रकार कवयित्री

Scanned by CamScanner

को भी अपने आने से किसी को तकलीफ न हो इसका ध्यान रखने के साथ-साथ समष्टि के सुख के लिए किये गए कार्य के लिए कोई अपना नाम न ले, इसका ध्यान रखना है। कवयित्री बादल के माध्यम से इतनी ही इच्छा व्यक्त करती है कि सुख के रोमांच के समान विश्व में मेरी सुखपूर्ण स्मृति शेष रहे।

बदली विस्तृत आकाश के किसी भी कोने पर अपना हक जताना नहीं चाहती। विश्व में वह अपना इतना ही परिचय और इतिहास छोड़ जाना चाहती है कि उसका कल निर्माण हुआ था और आज वह बरसकर मिट गई। अर्थात् महादेवीजी अपना जीवन इस तरह जीना चाहती हैं कि विश्व कल्याण के लिए वह अपार कष्ट उठाएँ। लेकिन उनके किये हुए कार्य का इतिहास न बन जाय। अनासक्त जीवन ही उनके लिए प्रेम था और इसी ढंग का जीवन जीने का उन्होंने प्रयास किया। इसी कारण महादेवी करूणा की सबसे बड़ी कवयित्री मानी जाती है।

विशेष:-

महादेवी जी की तमाम सुंदर रचनाओं के बीच "मैं नीर भरी दुख की बदली" काफी लोकप्रिय है। इस कविता में महादेवी ने अपना परिचय चंद शब्दों के जरिए समेट दिया है। भाषा में प्राजंल प्रवाह है। "मैं नीरभरी दुख की बदली" में रूपक अलंकार है।

Scanned by CamScanner